ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 226-227**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

भारतीय परम्परा के समग्र विकास की श्रृंखला में एकात्म मानववाद

डॉ0 दिग्विजय नाथ चौबे

सहायक आचार्य– राजनीति शास्त्र एवं मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म0प्र0)

Received-06.06.2025, Revised-15.06.2025, Accepted-22.06.2025 E-mail : aaryavart2013@gmail.com

सारांशः *भारत विविधता से परिपूर्ण राष्ट्र है। इसकी विविधतापूर्ण भौगोलिक एवं सामाजिक वास्तविकता ने भारत के जनमानस में मह सर्वोच्च बोध उत्पन्न किया कि सम्पूर्ण सृष्टि का समग्र विकास एकात्म है। यह ऐसी अभेद की अवस्था है, जहाँ स्वयं और अन्य के बीच कोई विभेद नहीं है। हमारी ज्ञान परम्परा एकात्म बुद्धि का ही समन्वित रूप है, जो समग्र विकास के लिए उत्तरदायी है। वेद, उपनिषद, पुराण एवं अन्य भारतीय महाकाव्य एकात्म संवाद के ही रूप हैं। यहाँ ज्ञान की सभी विधाओं में समाजिकता एवं नैतिकता की प्रतिस्थापना होती है।*

नव भारत के सृजन में एकात्म मानववाद की महत्ती भूमिका है। यह एक ऐसी वैश्विक अवधारणा है जो भारत सहित विश्व के समावेशी विकास के लिए कृतसंकल्पित है। एकात्म मानववाद एक ऐसा दर्शन है जिसमें मनुष्य के सुख के लिए उससे जुड़ी समस्त इकाइयों की बराबर हिस्सेदारी है। एकात्म मानववाद अनिवार्य रूपसे व्यक्ति तथा समाज के संतुलित एकीकरण की धारणाओं पर आधारित है। एकात्म मानव वाद का दर्शन दीनदयाल उपाध्याय जी के सम्पूर्ण जीवन के अनुभवों पर आधारित है जिसकी जड़ें सनातन परम्परा से जुड़ी हुई है, और जिसका उद्देश्य भारत के खोये हुए वैभव को प्राप्त करना है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने इसके प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और पूज्य श्री गोलवलकर जी ने कहा कि "किसी भी भारतीय में राष्ट्रवादी भावनाओं को संचार करने के लिए तीन तत्व प्रमुख है। प्रथम देश के प्रति भक्ति भावना जो हमारी पवित्र जन्म भूमि है। द्वितीय बन्धुत्व की भावना जो इस सोच का परिणाम है कि हम इस महान भूमि की सन्तान हैं, और तृतीय राष्ट्रीय भावना जो एक समान उत्तरदायी, एक सी परम्परा, एक सा इतिहास, एक सी अपेक्षाएं तथा एक समान आदर्श के साथ उत्पन्न हो सकती हैं। गोलवलकर के इन भावनाओं का उत्स एकात्म मानववाद में देखा जा सकता है। वस्तुतरू एकात्म मानववाद पृष्ठभूमि के दो आयाम हैंः प्रथम पाश्चात्य जीवन दर्शन तथा द्वितीय भारतीय परम्परा। मानववाद मूलतः पारचात्य अवधारणा है तथा एकात्मकता भारतीय। पश्चिमी प्रयोग में नैतिक जीवन का वैशिष्ट्य जो दृष्टिगोचर होता है वह भारतीय एकात्मवाद का प्रतिफल है। अतः भारत सहित विश्व पटल पर जीवन दर्शन, व्यवहार और तत्व ज्ञान में एक सतत् विमर्श जो क्रियान्वित है, उस मंथन का नवाचार एकात्म मानववाद है।

कुंजीभूत शब्द– एकात्म मानववाद, वैश्विक, मानवता, सांस्कृतिक, नव भारत, सृजन, नवाचार, समग्र विकास, कृतसंकल्पित

पश्चिम में व्यक्ति, परिवार और समाज को अलग–अलग देखा जाता है। वहां प्रत्येक एक अलग इकाई है। अतः राष्ट्र और समाज की आवश्यकता को पूरा करने वाली संस्थायें भी अलग हैं। वहाँ व्यक्ति की सत्ता और परिवार को अलग–अलग देखा गयाहै जबकि विदित है कि सृष्टि में परस्पर अवलम्बन है। यहाँ पश्चिमी दृष्टिकोण खंडित है। एकात्म मानव दर्शन मनुष्य और पारिवार को अलग नहीं देखता है। मनुष्य परिवर और राष्ट्र एक इकाई है और शेष विश्व भी अलग नही है। यहाँ बूंद और सागर एक एकात्म है। यही कारण है कि भारतीय चिन्तन धारा में सबके विकास का उद्घोष है– सर्वे भवन्तु सुखिनः। एकाव्य मानव दर्शन में समग्र विकास का उन्मेष है। दीनदयाल उपाध्याय जी ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि– "व्यक्ति का विचार करते समय एनी सामाजिक अंगों उपांगो पर साथ–साथ विचार न करने के कारण बड़ी भूल हुई है। पश्चिम के लोग प्रत्येक अंग को पृथक–पृथक जानकर खंडित विचार करते रहे हैं। सृष्टि में परस्पर अवलंबन है लेकिन पश्चिम ने समग्रता नहीं देखा उनकी दृष्टि खंडित है।[1]

वस्तुतः भारतीय परम्परा के ऐतिहासिक विचार श्रृंखला की कड़ी के रूप में श्एकात्म मानववाद का आविर्भाव हुआ, जिसकी नूतन कड़ी पं दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानववाद है। पं० दीन दयाल उपाध्याय भारतीय परम्परा के जीवंत संवाहक हैं, उनके चिन्तन में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के हित से सम्बह कोई आयाम अशेष नहीं रहा है। ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य आध्यात्म तथा जीवन के विविध सोपान उनके चिन्तन दृष्टि से अछुते नहीं रहे हैं। उनके विचार सामयिक हैं। वे वेदमत, साधुमत और लोकमत में समन्वय स्थापित करते हुए भारतीय परम्परा जो काल की कठोरता में दब गई थी उसे एकात्म–मानव वाद में प्रणीत करके भारतीय प्रखर मेधा का प्रतिनिधित्व कर्ता के साथ ही साथ मनुष्यता और वैश्विक चेतना के सृजनकर्ता तथा दार्शनिक के रूप में मानव कल्याण की भावना को लेकर भारतीयता में आदितेय हो गये।

भारतीय ज्ञान परम्परा के चिन्तन पटल पर भारतीयता के प्रतीक स्वरुप पं० दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानववाद विचारणीय है। यह उपाध्याय जी के चिन्तन की वह फलश्रुति है, जिसके रूप में उन्होंने भारत के नूतन निर्माण का स्वप्न देखा और यथेष्टि रूप में सांस्कृतिक चेतना पर अपना मन्तव्य व्यक्त करते हुए कहा कि ष्हमने अपने प्राचीन संस्कृति पर विचार किया हैं, किन्तु हम कोई पुरातव्ववेत्ता नहीं है, जो किसी पुरातत्व संग्रहालय के संरक्षक बनकर बैठ जाएं। हमारा ध्येय संस्कृति का संरक्षण नहीं अपितु उसे गति देकर सजीव तथा सक्षम बनाना है। हमें अनेक रुढ़ियों को छोड़कर बहुत से सुधार करने होंगे। व्यवस्था का केन्द्र मानव होगा। भौतिक उपकरण मानव के सुख के साधन होगें साध्य नहीं। परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता, सृष्टि और परमेष्टि से आत्मीय एकात्मकता होगी तथा मानव इन सभी से सह अस्तित्व स्थापित करेगा।[2]

पं० दीन दयाल उपाध्याय भारतीय परम्परा के पोषक हैं, संवाहक है और उसी के अग्रदूत माने जाते हैं। भारतीय सनातन धारा में सदविचारों के स्वागत की श्रेष्ठ परम्परा सन्निहित हैं। अतएव वेद काल से ही 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की शोध यात्रा पर भारतीय सनातन परम्परा गतिमान है। इस दिव्य चिन्तन धारा के कारण ही भारत सदैव ज्ञान की बसुन्धरा से विभूषित रहा है, जिस पर दिव्य ज्ञान की यात्रा और नयी उपलब्धियों पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होते रहते हैं। भारतीय संस्कृति के विराट मूल्यों के आधार पर विश्व कल्याण की चिन्ता पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में आदि से अन्त तक समाहित हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ अपने विचारों को साझा करते हुए पं० दीन दयाल उपाध्याय जी ने इसे राष्ट्रीय फलक पर स्थापित किया। पहली बार 11 से 15 अगस्त 1964 में ग्वालियर में हुए भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में एकात्म मानववाद का अपना विचार राष्ट्र के समक्ष रखा। एकात्म मानववाद वह दर्शन है, जिसमें मनुष्य के हित के लिए उससे सम्बन्धित सभी इकाईयों को बराबर स्थान है तथा व्यक्ति और

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

समाज के संतुलित एकीकरण की धारणाओं पर यह स्थापित है। पं० दीनदयाल उपाध्याय का कथन है कि 'प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सामाजिक और संस्कृतिक केन्द्रीय विचार धारा होती है जिसका अनुकरण करके वह राष्ट्र प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता है।

वस्तुतः भारतीय परम्परा तथा जीवन दर्शन का अवलोकन एवं अनुभव करना एकात्म मानववाद की महत्वपूर्ण विशेषता है। एकात्म मानववाद सबके सुख, सबके हित और सबके मंगलमय जीवन की कामना करने वाला दर्शन हैं। शारीरिक एवं मानसिक सन्तुलन एकात्म मानववाद की भावना द्वारा स्थापित किया जाता हैं। 'उदार चरितानाम् तू वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात यह अपना है, वह पराया है। इस प्रकार की सोच संकीर्ण बुद्धि वालों की होती है, जो लोग उदार चरित के होते हैं, उनके लिए सम्पूर्ण धरा एक परिवार की तरह होती है। पं० दीनदयाल उपाध्याय इसी भावना से प्रेरित होकर सम्पूर्ण धरा को अपना परिवार मानते हैं और परिवार में भारतीय सनातन मूल्यों को समाहित करते हैं, जिसमें चतुष्टय पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष हैं। उनमें एकात्मकता की सूत्र बद्धता है और ये परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उसमें धर्म भी है, कर्म भी है और मुक्ति भी है। वे इसी सूत्रबद्धता से समाज का विवरण प्रस्तुत करते हुए व्याति को परमेष्टि तक लेकर चलते हैं। व्यक्ति से परमेष्टि तक की इस यात्रा में व्यक्ति का और राष्ट्र का समस्त मानवता से अत्यन्त गहरा सम्वन्ध दृष्टिगत होता है, जो हमारी सनातन परम्परा से निःसृत है। जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रुपी चतुष्टय पुरुषार्थ का विधान है। धर्म अर्थात आचरण के वे नियम जिसको हम धारण करते है। धियो धारेत धर्म। अर्थात सबको एक सूत्र में पिरोने वाला धर्म ही है। पं० दीन दयाल उपाध्याय जी का कथन है कि 'यह जो हमारा राष्ट्र है, भारतीय राष्ट्र है, एक जीवन इकाई है, यह धर्मावलम्बी है, हिन्दू धर्म परिवेष्ठित है। हमारी भारतीयता हिन्दुत्व का वृहद स्वरूप है। यह मानलेना उतना ही सत्य है जैसे हमारा मनुष्य होना स्वयं सिद्ध है। इसी तरह यह हिन्दू राष्ट्र भी स्वयं सिद्ध है। अतः उन्होंने चतुष्टय पुरुषार्थों की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए उसे तरुणोपाय की संज्ञा प्रदान की। उन्होंने संकट से रक्षा के लिए हिन्दू जीवन दर्शन की उपादेयता को सिद्ध किया। और जनमानस को सचेत करते हुए कहा कि–षविश्व की समस्त समस्याओं का हल समाजवाद नहीं हिन्दूवाद है। यह एक ऐसा जीवन दर्शन है जो जीवन का विचार करते समय उसे पृथक–पृथक नहीं करता, अपितु सम्पूर्ण जीवन को एक इकाई मानकर उस पर विचार करता है।[3] अतः समस्त व्यवस्था का समाधान एकात्म मानववाद में समाहित हैं।

दीनदयाल जी का आग्रह है कि व्यक्ति की तरह राष्ट्र का भी मन होता है। साथ साथ रहने का संकल्प ही शब्द का मन है। एकाला मानव दर्शन वस्तुतः विश्व दर्शन का परिकार है। यहाँ मनुष्य परिवार और राष्ट्र अलग अलग इकाइयों का नहीं हैं। इसी प्रकार राष्ट्र और विश्व भी अभिन्न है। यहाँ अंश और संपूर्ण एक है। पं० दीन दयाल उपाध्याय ने जिस एकात्म मानववाद का वर्णन किया है वह प्रकृति व्यक्ति तथा समाज के सत्य तत्वों के विषय में वैज्ञानिक मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्रीय तथा सांस्कृतिक विश्लेषण का निष्कर्ष है, जिसमे एकात्मकता, समग्रता, पूरकता तथा आत्मीयता का वोध होता है। वस्तुतरू जड़वाद के पतिष्ठान पर रचित संघर्ष, स्पर्धा, स्वतन्वता, समानता एवं बंधुता की पृष्ठ भूमि पर ही उन्होंने अपनी एकात्मवादी चिंतन को विवेचित किया है।[4] और बौद्धिक वर्ग में एकात्म मानववाद की व्याख्या करते हुए कहा कि स्वतंत्रता, समानता, एवं मानव की अध्यात्मिक चेतना ही उसे समग्रता एवं पूरकता देती है। अतः चेतना तत्व आत्मीयता है। हम किसी का पूरक बनकर उपकार नहीं करते हैं। अपने आत्मीय जनों के सहयोग का सुख प्राप्त करते हैं। सहानुभूति मानवता का गुण है और आत्मीयता के कारण की सहानुभूति का प्रगटीकरण होता है।[5]

वस्तुतः एकात्म मानववाद भारतीय समग्र विकास के वैश्विक विचार के प्रवाह का एक युगानुकुल व्याख्या है, जिसे दीनदयाल ने सुत्रवत कर भारतीय जीवन दर्शन में समाहित करने का अभिनव प्रयास किया है। उन्होंने एकात्म मानववाद के सार तत्व ष्यत पिण्डे तत् ब्रहमाण्डे के सिद्धांत पर मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कामना की है। दीनदयाल जी का आग्रह है कि व्यक्ति के तरह राष्ट्र का भी मन होता है, साथ साथ रहने का संकल्प ही राष्ट्र का मन है।6 एकात्म मानव दर्शन विश्व दर्शन का परिष्कार है। यहाँ मनुष्य परिवार और राष्ट्र अलग अलग इकाइयाँ नहीं हैं, इसी प्रकार राष्ट्र और विश्व भी अभिन्न है, यहाँ अंश और सम्पूर्ण एक है।[7] यद्यपि एकात्म मानववाद की फलश्रुति वैचारिक चिन्तन से कहीं अधिक व्यापक और विस्तृत है और दत्तोपंत ठेंगडी जी ने इसके आदर्शों और सिद्वान्तों के आधार पर अपना मन्तव्य व्यक्त करते हुए कहते हैं कि एकात्म मानव वाद प्रत्येक राष्ट्र को अपनी अपनी प्रकृति और प्रकृति के अनुसार विकास करने की स्वतन्त्रता प्रदान करने में सक्षम होगा। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण धर्म के अनुसार विकास कर, विकास का फल सम्पूर्ण समाज को अर्पित करता है, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र अपने को मानवता का एक अंग समझकर मानवता के साथ के साथ एकात्म स्थापित कर ले तो मानवता के साथ ही साथ राष्ट्र का भी उन्नयन होगा। इस तरह प्रत्येक राष्ट्र स्वायत रहते हुए अपना विकास भी करेगा और विश्वात्मा का भाव मन में रखने के कारण सम्पूर्ण मानवता का पोषक भी होगा। यही पं० दीन दयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद की रचना की चरम परिणीत होगी"।[8]

निष्कर्ष–भारतीय ज्ञान परम्परा के आदर्शों पर अवलम्बित एकात्म मानववाद एक ऐसा दिकसूचक दृष्टिकोण है, जो आधुनिक युग की विभाजक प्रवृतियों, मानवीय समस्याओं एवं विषमताओं से त्राण दिलाने का सामष्टिक जीवन दर्शन है। जिसमें व्यष्टि में समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि का विधान है और यह विधान पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी में प्रवाहित होती है। वस्तुत पं० दीनदयाल उपाध्याय का चित्तन भारतीय राष्ट्रीयता हेतु युगानुकूल, स्वदेशानुकूल, प्रसंगानुकूल एवं समयानुकूल है। उनका यह चिन्तन आधुनिक समय में भी मौलिकता, नैतिकता एवं उपयोगिता से परिपूर्ण है। समग्र विकास की दृष्टि में उनका विचार दर्शन समस्त विश्व की सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दिशा व दशा हेतु मार्गदर्शन का कार्य के साथ ही साथ समस्त मानवता के हित व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. महेश चन्द्र शर्मा, पं० दीन दयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचार, प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2015, पृ. 473.
2. ह्रदय नरायण दीक्षित, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही हमारा मूल विचार है', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 114–115.
3. दीन दयाल उपाध्याय समाजवाद, लोकतन्त्र अथवा मानववाद' पाञ्चजन्य, दिल्ली, २ जनवरी, 1961, पृ. 14.
4. डॉ० महेश चन्द्र शर्मा, पं० दीन दयाल उपाध्याय कृतित्व एवं विचार, प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2015, पृ. 383.
5. वही पृ0 302.
6. ह्रदय नारायण दीक्षित, पं दीनदयाल उपाध्याय, अनामिका प्रकाशन, प्रयागराज 2021, पृ. 129.
7. नेहा जैन, पं दीनदयाल उपाध्याय चिंतन दृष्टि, आशा प्रकाशन, दिल्ली 2019, पृ. 21.
8. भारतीय जनसंघः घोषणाएं एवं प्रस्ताव भाग–1, सिद्धांत एवं नीति, पृ.1.

*****